महात्मा बसवेश्वर के वचनों की प्रासंगिकता

प्रा.डॉ.प्रवीण कांबळे
हिंदी विभाग प्रमुख तथा शोध मार्गदर्शक
श्री कुमारस्वामी महाविद्यालय, औसा,जि.लातूर

बारहवीं शताब्दी में समाज सुधारक महात्मा बसवेश्वर जी का योगदान महत्वपुर्ण रहा है | उनके वचनों की प्रामाणिकता आज भी प्रासंगिक है | महात्मा बसवेश्वर जी ने अपना वचन साहित्य कन्नड भाषा में लिखा है | कन्नड साहित्य के विकास वीरशैव साहित्य का विशेष योगदान माना जाता है | उन्होंने लिंगायत धर्म की स्थापना की | वीरशैव साहित्य के काल को सुवर्ण युग माना गया है | जिसमें तत्कालीन धार्मिक और सामाजिक रुढ़ियों में परिवर्तन लाने के लिए क्रांति की गयी है | उन कुकर्म रुढ़ियों का विरोध कर नए प्रकार अध्यात्म प्रकाश, नई धार्मिक श्रध्दा तथा लौकिक दृष्टि का प्रादुर्भाव हुआ |

महात्मा बसवेश्वर जी ने वचन साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु १९६४ मे बसव समिती नामक केंद्रीय संस्था की स्थापना बेंगलूर में की गयी | अत: अप्रकाशित वीरशैव साहित्य का प्रकाशन करना और अमूल्य प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह करना आदि उनका उद्देश रहा है | वचन का अर्थ है - ''मनुष्य के मुँह से निकलने वाले सार्थक शब्द या वाणी को वचन कहा गया है |''१ उनके वचनों में धार्मिक क्रांति, सामाजिक क्रांति , आर्थिक क्रांति और नैतिक क्रांति आदि क्रांतियों को देखा जाता है | उन्होंने तत्कालिन रुढ़ी परंपराओं का विरोध कर सामान्य मानव के जीवन में परिवर्तन लाने का महत्वपुर्ण कार्य किया है |

महात्मा बसवेश्वर जी के कार्यों में महत्वपुर्ण तत्कालिन सामाजिक चिंतन रहा है | उनके सामाजिक सुधार में जाति प्रथा का विरोध कर अस्पृश्यता का उन्मूलन किया है | उन्होंने जाती व्यवस्था का विरोध कर मानव कर्मों को महत्व दिया है | जैसे

''लोहा गर्म करके लोहान बने , कपडे धोकर धोबी बने,
ताने बाने पूरकर जुलाहे बने, वेदादि पुस्तकें पढ़कर ब्राह्मण बने,
क्या कोई ऐसा है जो कान से जन्मता है यहाँ |
अत: हे कूडलसंगमदेव ! कुलीन वही है जो
लिंगस्थल को सम्यकरीत्या जानता है |''२

साथ ही उन्होंने पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था का विरोध कर स्त्री को समान अधिकारी माना है | बसवेश्वर जी ने धर्म के द्वार नारियों के लिए खोल दिए थे | उनके द्वारा आत्मा का कोई लिंग नही हैं | स्त्री और पुरुष में निवास करनेवाली आत्मा समान है | वैदिक धर्म में स्त्री को शुद्र माना है और उसे आध्यात्मिक साधना से वंचित रखा है| पर महात्मा बसवेश्वर जी ने स्त्री को अध्यात्मिक साधना का प्रदान किया है | उन्होंने आध्यात्म में स्त्री -पुरुष भेद नही माना है | जैसे महान शरण जेड़र दासिमय्या के निम्न वचन हैं -

''जिसके लंबे केस और पयोधर है,
वह नारी कहलाती है,
जिसके दाढ़ी और मूँछ है,
वह पुरुष कहलाता है,
किंतु इन दानों के मध्य निवास करनेवाली आत्मा
न स्त्री है और न पुरुष है, रामनाथ ||''३

सामाजिक आर्थिक सुधार के लिए महात्मा बसवेश्वर जी ने कायक को (श्रम, धर्म) महत्व दिया है | व्यक्ति को अपने जीविका के लिए कोई न कोई काम या श्रम करना ही पडता है | जबकि यह कार्य यही काम यदि परमात्मा की पूजा मानकर पुर्ण समर्पण, इमानदार और लगन के साथ किया जाता है, तो वह कायक बन जाता है |कायक द्वारा प्राप्त धन पुर्ण रुप से व्यक्ति विशेष मात्र का नहीं होता है | इसका कुछ अंश जंगम दासोह के लिए खर्च करना आवश्यक है | जंगम का तात्पर्य उस पवित्र आत्मा से है जो आध्यात्मिक जगत में पुर्णता प्राप्त कर चुका होतो है और सदैव शिवभक्ति का प्रचार-प्रसार करने को सर्वत्र घुमता रहता है | दासोह का अर्थ अर्पण करना है | कायक का तात्पर्य -कायक समर्पण भाव से या वृत्ति या जीविकोपार्जन का पवित्र साधन है | ४ कायक स्वयं में स्वर्ग है यथा कायकवे कैलाश | वास्तव में लिंगायत धर्म में गुरु, लिंग, जंगम की त्रयी की कड़ी में यह चौथा बिंदु है | अत: कर्म को स्वर्ग समान माना गया है | जैसे -

"यदि कोई कायक के सम्पादन में व्यस्त है तो
उसे उसमें ही व्यस्त रहना चाहिए |
गुरु के आने पर उनके दर्शन करने को त्यागकर भी
लिंग की पूजा और जंगम की परवाह किऐ बिना
उसे कायक में ही निरस रहना चाहिए |
क्यों कि कायक ही कैलास है |
अमरेश्वरलिंग को भी कायक से ही मुक्ती की प्राप्ति संभव है |"५

इस प्रकार महात्मा बसवेश्वर जी ने नैतिक मुल्यों की आवश्यकता पर बल दिया है | तत्कालीन सामाजिक और धार्मिक परिवर्तन कर नए मुल्यों की स्थापना की है | मानव को मानवता से जीवनयापन करने की प्रेरणा दी है | तत्कालीन रुढ़ि-परंपरा, कुप्रथाओं का विरोध कर स्त्री-पुरुष समानता, मानवता, विश्व बंधुत्व, कर्म की श्रेष्ठता आदि का संदेश दिया है | जो आज भी उनके वचनों की प्रासंगिकता है |

संदर्भ :

१. प्रामाणिक हिंदी कोश - सं.रामचंद्र वर्मा पृ.७४३
२. बसव और उनकी शिक्षाएँ - प्रो.बी विरूपाक्षप्पा पृ.११
३. बसव और उनकी शिक्षाएँ - प्रो.बी विरूपाक्षप्पा पृ.१३
४. वचन - सं.डॉ.एम.एम.कलबुर्गी पृ.८८४
५. बसव और उनकी शिक्षाएँ - प्रो.बी विरूपाक्षप्पा पृ.१८

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com